

यह अंडा देता है, यह अंडा आकाश में ही फूटता है तथा बच्चा ज़मीन पर आने से पूर्व ही उड़ने लगता है पर्या. अलल-पक्ष।

**अललाना** अ.क्रि. (तद्.) जोर से चिल्लाना, लगातार चिल्लाना, गला फाड़ कर चिल्लाना या बोलना।

**अलल्ले-तल्ले** वि./क्रि.वि. (अर.) दे. अललहिसाब।

**अलवण जल** पुं. (तत्.) बहती हुई नदी, सरिता सोते आदि का जल जिसमें नमक नहीं होता।

**अलवान** पुं. (अर.) उत्तम कोटि की ऊनी चादर।

**अलविदा** अव्य. (अर.) विदाई के समय कहा जाने वाला शब्द, अच्छा अब विदा स्त्री. रमजान के महीने का अंतिम शुक्रवार।

**अलस** पुं. (तत्.) दे. आलस्य पुं. पैर की उंगलियों का रोग वि. 1. आलसी, आलस्य से युक्त, सुस्त 2. मंद 3. अलसाया हुआ 4. जिसमें लस (चमक) न हो, द्युतिहीन।

**अलसता** स्त्री. (तत्.) 1. आलस्य, शिथिलता 2. कामचोरी 3. थकावट से युक्त होने का भाव।

**अलसना** अ.क्रि. (तद्.) आलस्य से युक्त होना।

**अलसाना** अ.क्रि. (तद्.) 1. आलस्य में पड़ना 2. शिथिल होना 3. कुछ करने का जी न करना।

**अलसित** वि. (तत्.) 1. अलसाया हुआ, आलस्य युक्त 2. अशोभित।

**अलसी** स्त्री. (तद्.) 1. एक तिलहन का पौधा और उसका बीज 2. अलसी, सन।

**अलसौंहा** वि. (देश.) आलस्य से युक्त, थका हुआ।

**अलस्सुबह** क्रि.वि. (अर.) तड़के, भोर के समय।

**अलह** वि. (तद्.) अलभ्य, दुर्लभ। (अर.) 'अल्लाह' का लघु रूप, परमात्मा।

**अलहदगी** स्त्री. (अर.) 1. अलग होने का भाव 2. पृथक्कता, बिलगाव 3. अलगौड़ा।

**अलहदा** वि. (अर.) अलग, जुदा, पृथक्।

**अलहिया** स्त्री. (तत्.) एक रागिनी जिसमें सभी कोमल स्वर होते हैं और जिसका प्रयोग करुण रस को प्रकट करने में होता है, अल्हैया 'आल्हा'।

**अलहैरी** पुं. (अर.) अरब के ऊँटों की एक प्रजाति, यह ऊँट बहुत तेज चलता है, इसके एक ही कूबड़ होता है तथा शरीर पर अधिक बाल होते हैं।

**अलात** पुं. (तत्.) 1. अंगार 2. जलती हुई लकड़ी, अधजली लकड़ी 3. लुआठी (अर.) लोहा काटने की निहाई।

**अलान** पुं. (तद्.) 1. हाथी बाँधने का खूँटा या सीकड़ 2. बेड़ी, बंधन 3. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी गई लकड़ी।

**अलानाहक** अव्य. (फा.) बिना मतलब, बेकार, नाहक।

**अलानिया** क्रि.वि. (अर.) ऐलानिया, स्पष्ट रूप से, खुल्लम-खुल्ला, डंके की चोट पर।

**अलाप** पुं. (तत्.) दे. आलाप ।

**अलापना** अ.क्रि. (तत्.) 1. शास्त्रीय रीति से गाना, आलाप करना 2. सुर खींचना 3. अपनी ही बात किए जाना 4. व्यर्थ में बोलना प्रयो. वह अपना ही राग अलाप रहा है, किसी की नहीं सुनेगा।

**अलाप्य** वि. (तत्.) जिसे लुप्त या समाप्त न किया जा सके, जिसे छिपाया न जा सके।

**अलाबु/अलाबू** स्त्री. (तत्.) 1. लौकी का फल, घीया, कद्दू 2. लौकी का तुंबा 3. तुंबे का पात्र टि. लौकी का फल पकने और सूखने के बाद उसका छिलका अत्यंत कठोर हो जाता है, जिसमें से उसके सूखे बीज आदि निकालकर उसका पात्र की तरह प्रयोग किया जा सकता है, इसी कवच को तुंबा या तूंबा कहा जाता है।

**अलाभ** पुं. (तत्.) लाभ का अभाव, फायदा न होने का भाव 2. न लाभ, न हानि 3. हानि।

**अलाभकर** वि. (तत्.) जिससे कोई (आर्थिक) लाभ न हो।